



N

23 Sep 2008

07:15 PM

Barwani

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121711501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 23/09/2008  
दिन \_\_\_\_\_: मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 19:15:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 32:18:52 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Barwani  
राज्य \_\_\_\_\_: Madhya Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 22:02:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 74:56:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:30:16 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 18:44:44 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:07:41 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 18:55:50 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:19:27 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:25:18 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:05:52 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 06:54:56 कन्या  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 24:19:22 मीन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पुनर्वसु - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: परिघ  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मार्जार  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: को-कोमल  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: तुला

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	आश्विन	1
पंजाबी	संवत : 2065	आश्विन	8
बंगाली	सन् : 1415	आश्विन	7
तमिल	संवत : 2065	पुरुटासी	8
केरल	कोल्लम : 1184	कन्नी	7
नेपाली	संवत : 2065	आश्विन	8
चैत्रादि	संवत : 2065	आश्विन	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2065	भाद्रपद	कृष्ण 9

### पंचांग

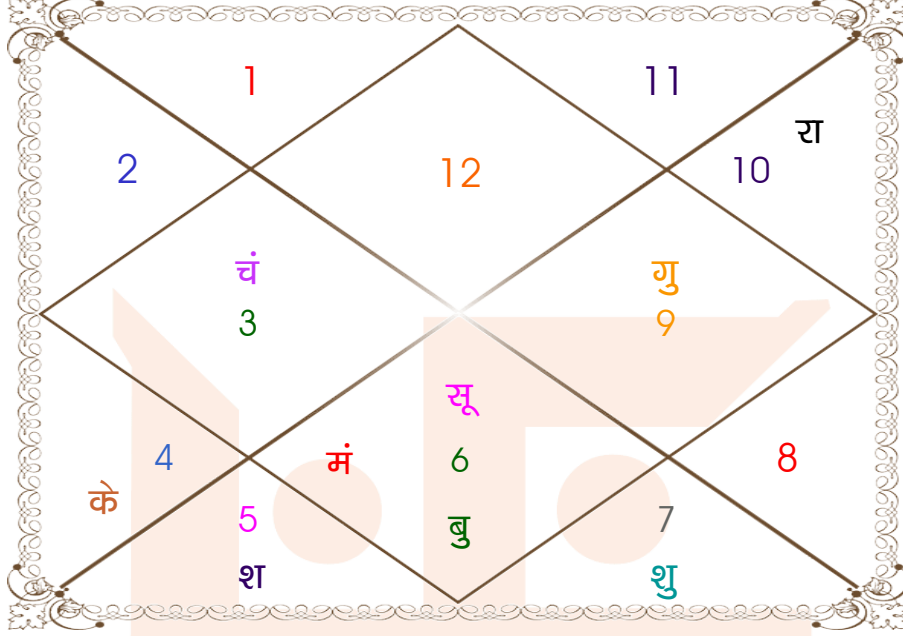
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:35:33  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:08:15 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वरियान  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:36:34 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:32:01 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 20:16:51  
भभोग \_\_\_\_\_ : 57:20:57  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 10 वर्ष 3 मा 26 दि

### घात चक्र

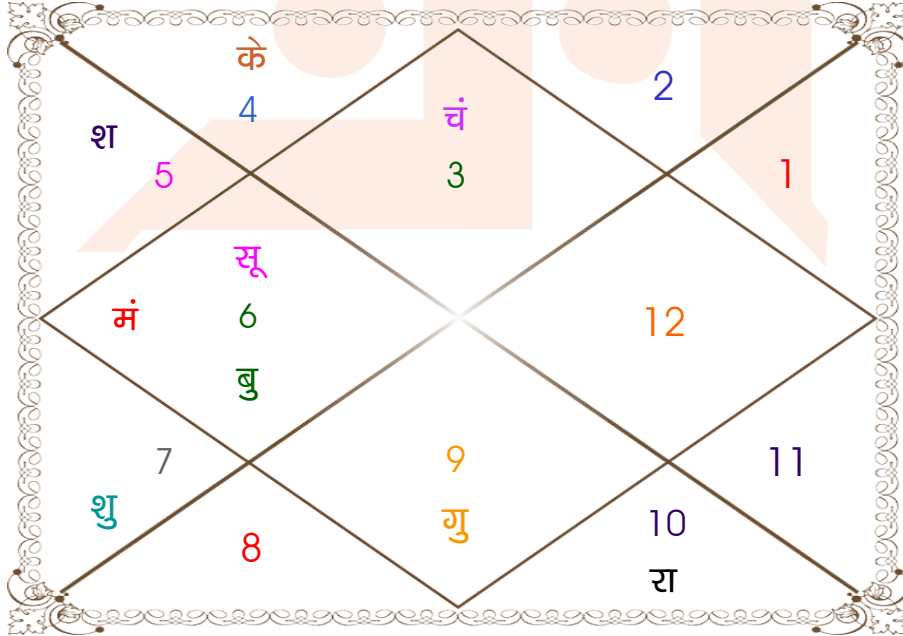
मास \_\_\_\_\_ : आषाढ़  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : सोमवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मूषक  
लग्न \_\_\_\_\_ : कर्क  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मीन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : मेष  
बुध \_\_\_\_\_ : मकर  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शनि \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
राहु \_\_\_\_\_ : कर्क

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

ल			चं
			के
रा			श
गु		शु	बु सू मं

## लग्न कुंडली

चं		ल
के		रा
श		गु
बु सू मं	शु	

विंशोत्तरी  
गुरु 10वर्ष 3मा 26दि  
गुरु

23/09/2008

21/01/2123

गुरु	20/01/2019
शनि	20/01/2038
बुध	20/01/2055
केतु	20/01/2062
शुक्र	20/01/2082
सूर्य	20/01/2088
चन्द्र	20/01/2098
मंगल	21/01/2105
राहु	21/01/2123

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 3मा 14दि

उल्का

08/01/2022

08/01/2028

उल्का	08/01/2023
सिद्धा	09/03/2024
संकटा	09/07/2025
मंगला	08/09/2025
पिंगला	08/01/2026
धान्या	09/07/2026
भ्रामरी	10/03/2027
भद्रिका	08/01/2028

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र  
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश  
+919340201506,7024210124  
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

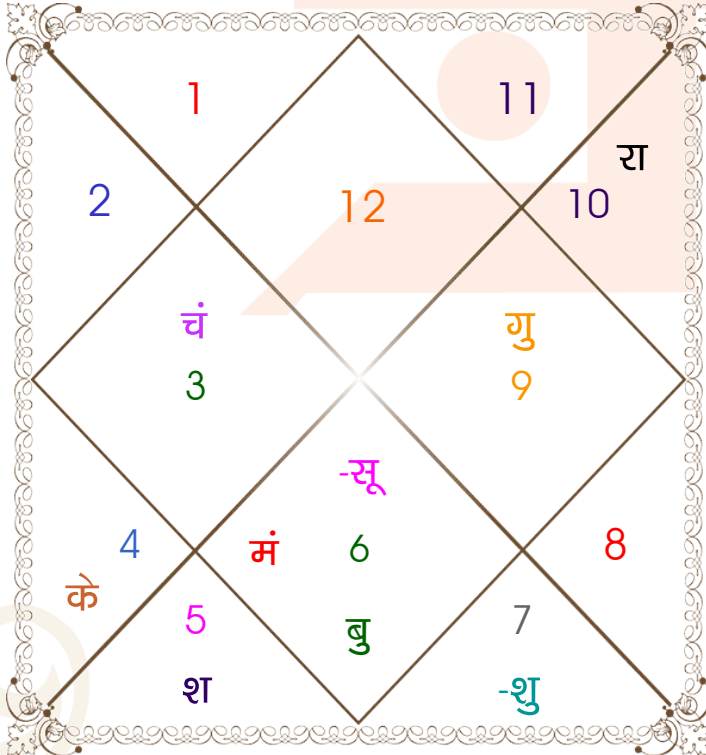
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	24:19:22	465:18:05	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	---
सूर्य			कन्या	06:54:56	00:58:45	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	सम राशि
चंद्र			मिथु	24:43:48	13:58:12	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
मंगल			कन्या	28:53:42	00:39:58	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
बुध			कन्या	28:49:29	00:04:45	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	स्वराशि
गुरु			धनु	18:55:37	00:02:54	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	स्वराशि
शुक्र			तुला	05:20:40	01:13:16	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	मूलत्रिकोण
शनि			सिंह	20:22:15	00:07:22	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मक	23:48:36	00:01:17	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	मंगल	मित्र राशि
केतु			कर्क	23:48:36	00:01:17	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	मित्र राशि
हर्ष	व		कुंभ	26:16:34	00:02:21	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	केतु	---
नेप	व		मक	27:54:05	00:01:11	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
प्लूटो			धनु	04:34:06	00:00:27	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
दशम भाव			धनु	18:52:04	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	राहु	--

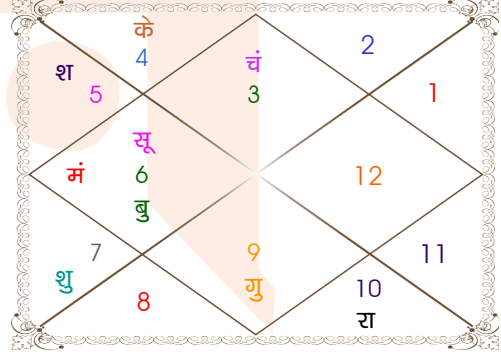
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:58:56

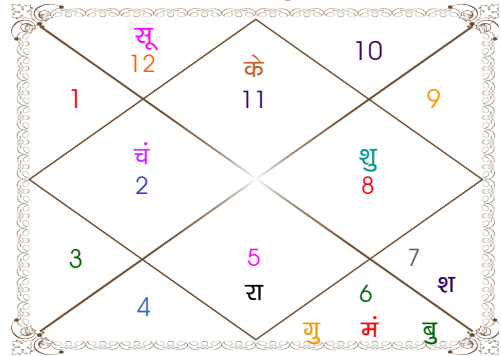
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र  
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश  
+919340201506, 7024210124  
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 08:24:49	मीन 24:19:22
2	मेष 08:24:49	मेष 22:30:16
3	वृष 06:35:43	वृष 20:41:10
4	मिथुन 04:46:37	मिथुन 18:52:04
5	कर्क 04:46:37	कर्क 20:41:10
6	सिंह 06:35:43	सिंह 22:30:16
7	कन्या 08:24:49	कन्या 24:19:22
8	तुला 08:24:49	तुला 22:30:16
9	वृश्चिक 06:35:43	वृश्चिक 20:41:10
10	धनु 04:46:37	धनु 18:52:04
11	मकर 04:46:37	मकर 20:41:10
12	कुम्भ 06:35:43	कुम्भ 22:30:16

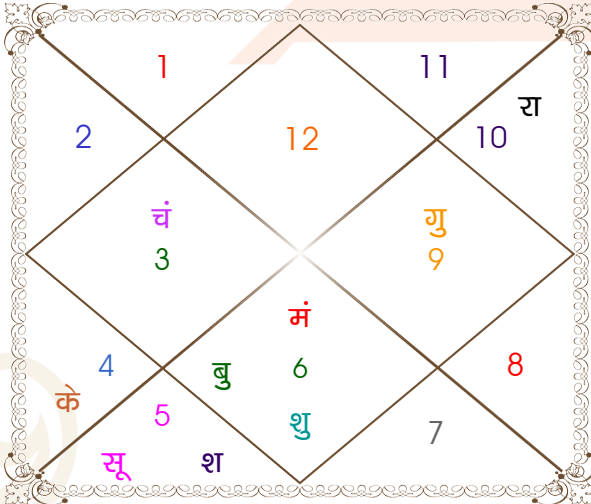
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	24:19:22
2	मेष	27:28:56
3	वृष	24:17:10
4	मिथुन	18:52:04
5	कर्क	15:01:38
6	सिंह	16:23:01
7	कन्या	24:19:22
8	तुला	27:28:56
9	वृश्चिक	24:17:10
10	धनु	18:52:04
11	मकर	15:01:38
12	कुम्भ	16:23:01

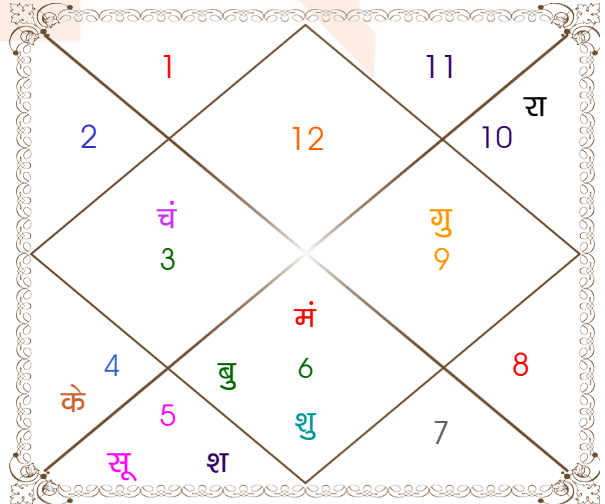
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



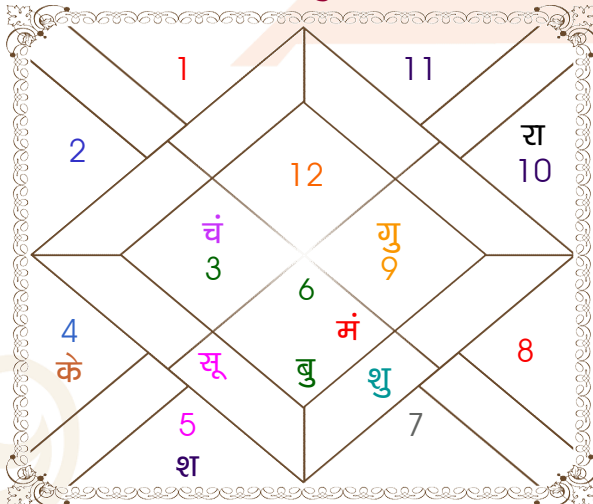
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	वृद्ध	शान्त	नेत्रपाणि	0.92	22 %
चंद्र	भातृ	मातृ	मृत	मुदित	सभा	8.55	72 %
मंगल	आत्मा	भातृ	बाल	खल	भोजन	0.68	52 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल	स्वस्थ	नेत्रपाणि	6.92	66 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	नेत्रपाणि	0.94	67 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	बाल	स्वस्थ	नेत्रपाणि	0.74	24 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	खल	उपवेशन	3.34	27 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	मुदित	कौतुक	0.00	80 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	80 %
कुल						22.09	

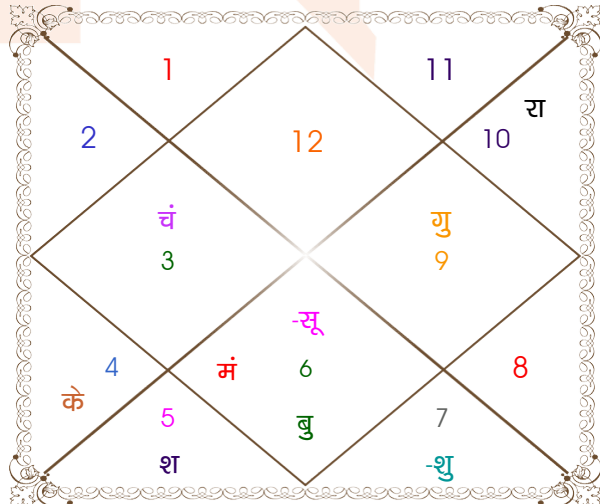
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 3 मास 26 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
23/09/2008	20/01/2019	20/01/2038	20/01/2055	20/01/2062
20/01/2019	20/01/2038	20/01/2055	20/01/2062	20/01/2082
00/00/0000	शनि 23/01/2022	बुध 17/06/2040	केतु 18/06/2055	शुक्र 21/05/2065
23/09/2008	बुध 02/10/2024	केतु 15/06/2041	शुक्र 17/08/2056	सूर्य 22/05/2066
बुध 26/12/2009	केतु 11/11/2025	शुक्र 15/04/2044	सूर्य 23/12/2056	चंद्र 20/01/2068
केतु 02/12/2010	शुक्र 10/01/2029	सूर्य 19/02/2045	चंद्र 24/07/2057	मंगल 21/03/2069
शुक्र 02/08/2013	सूर्य 23/12/2029	चंद्र 21/07/2046	मंगल 20/12/2057	राहु 21/03/2072
सूर्य 22/05/2014	चंद्र 25/07/2031	मंगल 19/07/2047	राहु 08/01/2059	गुरु 20/11/2074
चंद्र 21/09/2015	मंगल 02/09/2032	राहु 04/02/2050	गुरु 15/12/2059	शनि 20/01/2078
मंगल 26/08/2016	राहु 10/07/2035	गुरु 12/05/2052	शनि 23/01/2061	बुध 20/11/2080
राहु 20/01/2019	गुरु 20/01/2038	शनि 20/01/2055	बुध 20/01/2062	केतु 20/01/2082

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
20/01/2082	20/01/2088	20/01/2098	21/01/2105	21/01/2123
20/01/2088	20/01/2098	21/01/2105	21/01/2123	00/00/0000
सूर्य 09/05/2082	चंद्र 20/11/2088	मंगल 18/06/2098	राहु 04/10/2107	गुरु 10/03/2125
चंद्र 08/11/2082	मंगल 21/06/2089	राहु 07/07/2099	गुरु 26/02/2110	शनि 22/09/2127
मंगल 16/03/2083	राहु 21/12/2090	गुरु 12/06/2100	शनि 02/01/2113	बुध 24/09/2128
राहु 08/02/2084	गुरु 21/04/2092	शनि 22/07/2101	बुध 23/07/2115	00/00/0000
गुरु 26/11/2084	शनि 20/11/2093	बुध 19/07/2102	केतु 09/08/2116	00/00/0000
शनि 08/11/2085	बुध 21/04/2095	केतु 16/12/2102	शुक्र 10/08/2119	00/00/0000
बुध 14/09/2086	केतु 20/11/2095	शुक्र 15/02/2104	सूर्य 04/07/2120	00/00/0000
केतु 20/01/2087	शुक्र 21/07/2097	सूर्य 22/06/2104	चंद्र 03/01/2122	00/00/0000
शुक्र 20/01/2088	सूर्य 20/01/2098	चंद्र 21/01/2105	मंगल 21/01/2123	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 10 वर्ष 4 मा 3 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शनि - शुक्र</b>	<b>शनि - सूर्य</b>	<b>शनि - चंद्र</b>	<b>शनि - मंगल</b>	<b>शनि - राहु</b>
<b>11/11/2025</b>	<b>10/01/2029</b>	<b>23/12/2029</b>	<b>25/07/2031</b>	<b>02/09/2032</b>
<b>10/01/2029</b>	<b>23/12/2029</b>	<b>25/07/2031</b>	<b>02/09/2032</b>	<b>10/07/2035</b>
शुक्र 23/05/2026	सूर्य 28/01/2029	चंद्र 10/02/2030	मंगल 17/08/2031	राहु 05/02/2033
सूर्य 19/07/2026	चंद्र 26/02/2029	मंगल 15/03/2030	राहु 17/10/2031	गुरु 24/06/2033
चंद्र 24/10/2026	मंगल 18/03/2029	राहु 10/06/2030	गुरु 10/12/2031	शनि 05/12/2033
मंगल 30/12/2026	राहु 09/05/2029	गुरु 26/08/2030	शनि 12/02/2032	बुध 02/05/2034
राहु 22/06/2027	गुरु 24/06/2029	शनि 26/11/2030	बुध 10/04/2032	केतु 02/07/2034
गुरु 23/11/2027	शनि 18/08/2029	बुध 16/02/2031	केतु 03/05/2032	शुक्र 22/12/2034
शनि 24/05/2028	बुध 06/10/2029	केतु 21/03/2031	शुक्र 10/07/2032	सूर्य 12/02/2035
बुध 04/11/2028	केतु 27/10/2029	शुक्र 26/06/2031	सूर्य 30/07/2032	चंद्र 10/05/2035
केतु 10/01/2029	शुक्र 23/12/2029	सूर्य 25/07/2031	चंद्र 02/09/2032	मंगल 10/07/2035
<b>शनि - गुरु</b>	<b>बुध - बुध</b>	<b>बुध - केतु</b>	<b>बुध - शुक्र</b>	<b>बुध - सूर्य</b>
<b>10/07/2035</b>	<b>20/01/2038</b>	<b>17/06/2040</b>	<b>15/06/2041</b>	<b>15/04/2044</b>
<b>20/01/2038</b>	<b>17/06/2040</b>	<b>15/06/2041</b>	<b>15/04/2044</b>	<b>19/02/2045</b>
गुरु 10/11/2035	बुध 24/05/2038	केतु 09/07/2040	शुक्र 04/12/2041	सूर्य 30/04/2044
शनि 04/04/2036	केतु 15/07/2038	शुक्र 07/09/2040	सूर्य 25/01/2042	चंद्र 26/05/2044
बुध 14/08/2036	शुक्र 08/12/2038	सूर्य 25/09/2040	चंद्र 21/04/2042	मंगल 13/06/2044
केतु 06/10/2036	सूर्य 21/01/2039	चंद्र 25/10/2040	मंगल 21/06/2042	राहु 30/07/2044
शुक्र 10/03/2037	चंद्र 05/04/2039	मंगल 15/11/2040	राहु 23/11/2042	गुरु 09/09/2044
सूर्य 25/04/2037	मंगल 26/05/2039	राहु 09/01/2041	गुरु 10/04/2043	शनि 28/10/2044
चंद्र 11/07/2037	राहु 05/10/2039	गुरु 26/02/2041	शनि 21/09/2043	बुध 11/12/2044
मंगल 03/09/2037	गुरु 30/01/2040	शनि 24/04/2041	बुध 14/02/2044	केतु 29/12/2044
राहु 20/01/2038	शनि 17/06/2040	बुध 15/06/2041	केतु 15/04/2044	शुक्र 19/02/2045
<b>बुध - चंद्र</b>	<b>बुध - मंगल</b>	<b>बुध - राहु</b>	<b>बुध - गुरु</b>	<b>बुध - शनि</b>
<b>19/02/2045</b>	<b>21/07/2046</b>	<b>19/07/2047</b>	<b>04/02/2050</b>	<b>12/05/2052</b>
<b>21/07/2046</b>	<b>19/07/2047</b>	<b>04/02/2050</b>	<b>12/05/2052</b>	<b>20/01/2055</b>
चंद्र 03/04/2045	मंगल 12/08/2046	राहु 05/12/2047	गुरु 25/05/2050	शनि 15/10/2052
मंगल 03/05/2045	राहु 05/10/2046	गुरु 08/04/2048	शनि 04/10/2050	बुध 03/03/2053
राहु 20/07/2045	गुरु 22/11/2046	शनि 02/09/2048	बुध 29/01/2051	केतु 29/04/2053
गुरु 27/09/2045	शनि 19/01/2047	बुध 12/01/2049	केतु 18/03/2051	शुक्र 10/10/2053
शनि 18/12/2045	बुध 11/03/2047	केतु 07/03/2049	शुक्र 03/08/2051	सूर्य 28/11/2053
बुध 01/03/2046	केतु 01/04/2047	शुक्र 10/08/2049	सूर्य 13/09/2051	चंद्र 18/02/2054
केतु 31/03/2046	शुक्र 31/05/2047	सूर्य 25/09/2049	चंद्र 21/11/2051	मंगल 17/04/2054
शुक्र 26/06/2046	सूर्य 18/06/2047	चंद्र 12/12/2049	मंगल 09/01/2052	राहु 11/09/2054
सूर्य 21/07/2046	चंद्र 19/07/2047	मंगल 04/02/2050	राहु 12/05/2052	गुरु 20/01/2055

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल
20/01/2055	18/06/2055	17/08/2056	23/12/2056	24/07/2057
18/06/2055	17/08/2056	23/12/2056	24/07/2057	20/12/2057
केतु 29/01/2055	शुक्र 28/08/2055	सूर्य 24/08/2056	चंद्र 10/01/2057	मंगल 02/08/2057
शुक्र 23/02/2055	सूर्य 19/09/2055	चंद्र 03/09/2056	मंगल 22/01/2057	राहु 24/08/2057
सूर्य 02/03/2055	चंद्र 24/10/2055	मंगल 11/09/2056	राहु 23/02/2057	गुरु 13/09/2057
चंद्र 15/03/2055	मंगल 18/11/2055	राहु 30/09/2056	गुरु 24/03/2057	शनि 07/10/2057
मंगल 23/03/2055	राहु 21/01/2056	गुरु 17/10/2056	शनि 26/04/2057	बुध 28/10/2057
राहु 15/04/2055	गुरु 18/03/2056	शनि 06/11/2056	बुध 27/05/2057	केतु 06/11/2057
गुरु 04/05/2055	शनि 24/05/2056	बुध 24/11/2056	केतु 08/06/2057	शुक्र 01/12/2057
शनि 28/05/2055	बुध 24/07/2056	केतु 02/12/2056	शुक्र 14/07/2057	सूर्य 08/12/2057
बुध 18/06/2055	केतु 17/08/2056	शुक्र 23/12/2056	सूर्य 24/07/2057	चंद्र 20/12/2057

केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र
20/12/2057	08/01/2059	15/12/2059	23/01/2061	20/01/2062
08/01/2059	15/12/2059	23/01/2061	20/01/2062	21/05/2065
राहु 16/02/2058	गुरु 22/02/2059	शनि 17/02/2060	बुध 15/03/2061	शुक्र 11/08/2062
गुरु 08/04/2058	शनि 17/04/2059	बुध 14/04/2060	केतु 05/04/2061	सूर्य 11/10/2062
शनि 08/06/2058	बुध 05/06/2059	केतु 08/05/2060	शुक्र 04/06/2061	चंद्र 20/01/2063
बुध 01/08/2058	केतु 25/06/2059	शुक्र 14/07/2060	सूर्य 23/06/2061	मंगल 01/04/2063
केतु 23/08/2058	शुक्र 20/08/2059	सूर्य 04/08/2060	चंद्र 23/07/2061	राहु 01/10/2063
शुक्र 26/10/2058	सूर्य 06/09/2059	चंद्र 06/09/2060	मंगल 13/08/2061	गुरु 11/03/2064
सूर्य 15/11/2058	चंद्र 05/10/2059	मंगल 30/09/2060	राहु 06/10/2061	शनि 20/09/2064
चंद्र 17/12/2058	मंगल 25/10/2059	राहु 30/11/2060	गुरु 23/11/2061	बुध 11/03/2065
मंगल 08/01/2059	राहु 15/12/2059	गुरु 23/01/2061	शनि 20/01/2062	केतु 21/05/2065

शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु
21/05/2065	22/05/2066	20/01/2068	21/03/2069	21/03/2072
22/05/2066	20/01/2068	21/03/2069	21/03/2072	20/11/2074
सूर्य 09/06/2065	चंद्र 11/07/2066	मंगल 14/02/2068	राहु 02/09/2069	गुरु 29/07/2072
चंद्र 09/07/2065	मंगल 16/08/2066	राहु 18/04/2068	गुरु 26/01/2070	शनि 30/12/2072
मंगल 30/07/2065	राहु 15/11/2066	गुरु 14/06/2068	शनि 18/07/2070	बुध 17/05/2073
राहु 23/09/2065	गुरु 04/02/2067	शनि 20/08/2068	बुध 21/12/2070	केतु 13/07/2073
गुरु 11/11/2065	शनि 12/05/2067	बुध 20/10/2068	केतु 23/02/2071	शुक्र 22/12/2073
शनि 08/01/2066	बुध 06/08/2067	केतु 14/11/2068	शुक्र 24/08/2071	सूर्य 09/02/2074
बुध 28/02/2066	केतु 10/09/2067	शुक्र 24/01/2069	सूर्य 18/10/2071	चंद्र 01/05/2074
केतु 22/03/2066	शुक्र 21/12/2067	सूर्य 14/02/2069	चंद्र 17/01/2072	मंगल 27/06/2074
शुक्र 22/05/2066	सूर्य 20/01/2068	चंद्र 21/03/2069	मंगल 21/03/2072	राहु 20/11/2074

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

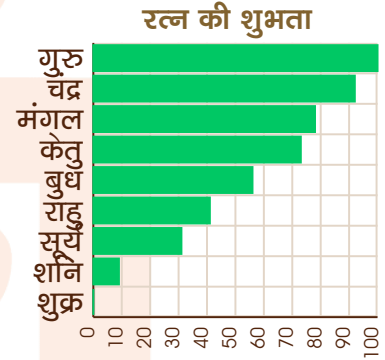
मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	92%	सुख, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	78%	दम्पति, धन, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, सुख
पन्ना	बुध	56%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	41%	हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	31%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	9%	शत्रु व रोग, हानि, व्यय
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	20/01/2019	44%	98%	84%	37%	100%	0%	9%	41%	73%
शनि	20/01/2038	6%	80%	66%	62%	100%	0%	34%	52%	61%
बुध	20/01/2055	44%	80%	78%	68%	100%	0%	9%	41%	73%
केतु	20/01/2062	6%	80%	84%	56%	100%	0%	0%	16%	86%
शुक्र	20/01/2082	6%	80%	78%	62%	100%	0%	22%	52%	80%
सूर्य	20/01/2088	53%	98%	84%	56%	100%	0%	0%	16%	61%
चंद्र	20/01/2098	44%	100%	78%	62%	100%	0%	9%	16%	61%
मंगल	21/01/2105	44%	98%	91%	37%	100%	0%	9%	16%	80%
राहु	21/01/2123	6%	80%	66%	56%	100%	0%	22%	58%	61%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शक्ति का प्रायः ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की सम्भावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाईयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा झंझट हो जाता है। बड़े भाई से भी किसी समय थोड़ा बहुत विवाद हो जाता है।

इस योग के कारण जातक अपने स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है पर कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति किसी समय चिन्तातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या थोड़ा बहुत संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सर्वत्र लाभ दिखालाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हस्तगत नहीं होता। सन्तान पक्ष से थोड़ा बहुत परेशानी घेरे रहती है तथा जातक को अपने शरीर में भी रोग व्याधि लग जाती है और उससे कष्ट उठाना पड़ता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है तथा जीवन का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के हैं। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं। आपके चहरे पर एक तेज होता है। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते हैं। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप

महत्वाकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ों की बातों पर अमल करते हैं। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यों में आपको दक्षता प्राप्त है। साथ ही आपने दृढ़ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यों को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्ठेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विदुषी के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगी। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीया होंगी। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगी परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपके रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकती हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगी। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगी। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगी। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही

बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगी।



## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़ी रहेंगी तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगी। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्न पूर्वक सुख साधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी परन्तु अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगी तथा अवसरानुकूल पहले अपनी ही इच्छा पूर्ण करेंगी। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके लिए रुचिशील रहेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा मित्र वर्ग भी गुणवान एवं शिक्षित रहेगा।

आप विभिन्न प्रकार के स्वादों के आस्वादन करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु नमकीन एवं मिष्ठान विशेष प्रिय रहेंगे तथा सामान्यतया स्वादिष्ट भोजन करना ही पसंद करेंगी। धन के प्रति आपके मन में पूर्ण लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन में तत्पर रहेंगी। साथ ही बहुमूल्य रत्न एवं आभूषणों से भी युक्त रहेंगी। आपकी वाणी में सामान्यतया ओजस्विता का भाव रहेगा लेकिन मधुरता में न्यूनता रहेगी। आप समय समय पर घर में धार्मिक कार्य कलापों या उत्सवों आदि का आयोजन करेंगी। साथ ही अन्यत्र आमंत्रित उत्सवों में भी अवश्य शामिल होंगी इसके अतिरिक्त नीति की आप ज्ञाता होंगी तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा चन्द्रमा भी मित्रराशि में स्थित होकर चतुर्थभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को भी अर्जित करके उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। माता के प्रभाव एवं सहयोग से भी आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ के योग बनते हैं। अतः यदि आप समय समय पर चल सम्पत्ति पर निवेश करते रहे तो इससे आपको वांछित लाभ हो सकता है।

आपका आवास सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर का आप विशेष ध्यान रखेंगी एवं इसकी सुन्दरता बनाए रखने में तत्पर होंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी प्राप्त होगा एवं युवावस्था से ही आपको अपने वाहन की प्राप्ति हो जाएगी।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। परिवार की शांति एवं समृद्धि में उनका मुख्य योगदान होगा तथा सभी सदस्यों का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी को कोई समस्या नहीं होने देंगी। जिससे परिवार के सभी सदस्य उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव होगा तथा समय समय पर आपको अपनी ओर से नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी एवं आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी माता के आज्ञाकारी होंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको को अर्जित करके परीक्षाएँ उत्तीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप ससम्मान उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी न्यायसंबंधी पाठ्यक्रम में कोई उच्चशिक्षा भी अर्जित कर सकती है।

यद्यपि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री होकर चतुर्थभाव में स्थित है तथापि वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप संबंधी समस्या का सामना कर सकती है। अतः यदि खान-पान पर नियंत्रण रखा जाय तो ऐसी परेशानियों से मुक्ति मिल सकती है तथा सामान्य समय सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता से ही अपने कार्य-कलापों को सम्पन्न करेंगी। कर्क राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से आप शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने में समर्थ होंगी जिससे समय-समय पर आप लाभान्वित होती रहेंगी। इसके साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का परिश्रम एवं बुद्धिमता से समाधान करेंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। आप आधुनिक विज्ञान साहित्य एवं पाश्चात्य भाषाओं के ज्ञान में भी रुचिशील होंगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके एक विदुषी के रूप में छवि स्थापित करेंगी। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा इनसे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। इसमें भावनात्मक आकर्षण भी विद्यमान होगा। आपके प्रेम में आदर्शवाद का भाव भी होगा मर्यादा एवं नैतिकता का अनुपालन भी करेंगी। यथार्थवादी प्रवृत्ति होने के कारण आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है तथा कन्या संतति की अधिकता हो सकती है। आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा पालन में भी तत्पर होंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द होगी। अतः कई कार्य वे बिना पूछे भी कर सकते हैं। लेकिन इसका आपको बुरा नहीं मानना चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं करनी चाहिए। इससे आपसी सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपका पूरा ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति से आप नित्य सहयोग प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में वे परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से शिक्षा के क्षेत्र में सफलताएं अर्जित करके अपने लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे साथ ही बच्चों की प्रगति से आप सन्तुष्ट होंगी तथा वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। वे अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य जनो को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे। जिससे लोगों से वे स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार आपका संतति सुख सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा बुध भी स्वराशिस्थ सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्य कारक एवं विविध प्रकार के कार्यों में दक्ष होता है। बुध के प्रभाव से वह सुशील विद्वान बुद्धिमान कलाप्रिय एवं प्रसिद्धि व्यक्ति होता है एवं कर्तव्य परायणता की भावना से युक्त होता है।

अतः इसके शुभ प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने संभाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। स्वच्छता के प्रति वह विशेष सतर्क होंगे तथा उज्ज्वल परिधानों से सज्जित रहेंगे। उनके बुद्धिमत्ता पूर्ण एवं उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जन भी प्रभावित होंगे। बुध के प्रभाव से वह एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार एवं समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता बनी रहेगी जिससे व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही भौतिकता के प्रति भी उनके मन में आकर्षण रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला में वह विशेष रुचिशील होंगे तथा इन क्षेत्रों में वह कोई विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। साथ ही सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में भी तत्पर होंगे।

सप्तम भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से आपका विवाह यथासमय सम्पन्न होगा। विवाह में मित्रों एवं संबंधियों का विशेष सहयोग रहेगा। लेकिन आप प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण सुखी होगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण का भाव रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के सिद्धांतों एवं मूल्यों में समानता रहेगी फलतः आपसी सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

आपका विवाह किसी सम्पन्न परिवार से होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह में मायके से दहेज के रूप में आपको वांछित धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे जीवन में यथोचित सहयोग मिलता रहेगा। आप भी उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में सलाह भी लेंगी।

आपके पति का सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियां भी उसके सद्ब्यवहार से प्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ होगी यदि किसी समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे आपको विशिष्ट उन्नति एवं लाभ प्राप्त होगा।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही बृहस्पति भी स्वराशि में दशमभाव में ही स्थित है। धनुराशि अग्नि तत्व एवं वृहस्पति वायु तत्व ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगी तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्य क्षेत्र में आप सामान्यातया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। तथा आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय करना विशेष पसंद करेंगी जिसमें आपको इच्छित सफलता की आपकी प्राप्ति होगी।

दशमभाव में धनुराशिस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षा विभाग, शिक्षक व्याख्याता, या प्रोफेसर, धर्मोपदेशक, बैंक अधिकारी शेयर ब्रोकर, सचिव सलाहकार या प्रशासनिक एवं कार्मिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रखेंगी। साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकती है। अतः जीवन में सतत उन्नति तथा उज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए। इससे आप बिना व्यवधानों एवं समस्याओं से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए स्वर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय, वित्त कम्पनियों में पूंजी निवेश, राजनीति, ठेके या सम्बंधित कार्य शिक्षा या धार्मिक, संस्थानों का स्वामित्व या व्यवस्थापक के रूप में आप प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित कर सकती है। साथ ही ब्याज आदि से भी आपको प्रचुर आय होगी। अतः आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों या वस्तुओं का ही कार्य करें।

दशमभाव में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से आप कोई सम्मानित एवं अधिकार प्राप्त पद भी अर्जित करेंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। साथ ही आप किसी शैक्षणिक संस्था, सामाजिक संस्था या धार्मिक संस्था की सम्मानित पदाधिकारी या सदस्या भी हो सकती हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी।

आपके पिता विद्वान, बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग उन्हें इच्छित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाने में तत्पर होंगे। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में भी वृद्धि होगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धांतिक एवं वैचारिक समानता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप पिता की आज्ञाकारी होंगी तथा सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को एक दूसरे की सलाह से सम्पन्न करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकों का पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। यदि आप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

### धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके

बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज मेंपद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तालाश में है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

### यात्रा-तबादला

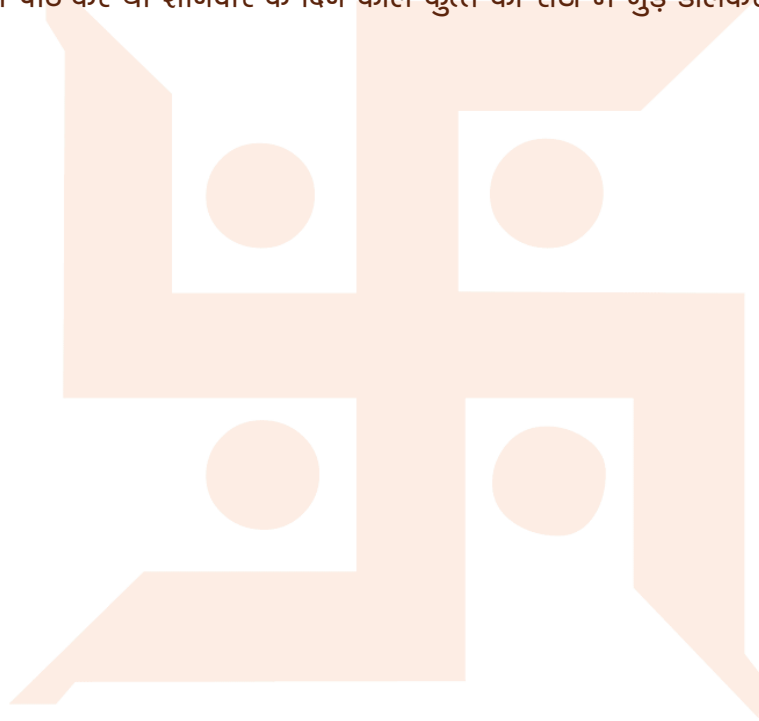
द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों

को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

### संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक उर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं

करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की

अहम भूमिका होगी।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

### यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

## संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरु हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

## यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी

धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपने सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

### व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। शनि का गोचरीय प्रभाव आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगा। आपका कठिन परिश्रम, कर्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी आपके वरिष्ठ अधिकारियों को प्रभावित करेगी। आपके काम करने का तरीका भी आपको दूसरों से अलग बनाता है।

मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। इस दौर में गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल होंगे और चिड़चिड़ा महसूस करेंगे। अथक प्रयास करने के बाद भी परिणाम आपके अनुसार नहीं होंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालांकि 23 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी मेहनत आपके अधिकारियों की नजर में आएगी और वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप निवेश करना शुरू कर सकते हैं। इस समय आप नयी सौदेबाजी भी कर सकते हैं।

मई से गुरु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। 23 सितम्बर के बाद आप जो योजना बनाएंगे, कार्य वैसे ही संपन्न होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं साथ ही परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे, परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद समय आपके लिए बहुत अच्छा

हो रहा है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

मई से गुरु का गोचर ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब कर सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं नहीं तो उन लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

17 अप्रैल के बाद पांचवे भाव पर शनि की दृष्टि के कारण संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनके अध्ययन कार्य में एकाग्रता नहीं रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं भी बनी रहेगी।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मई के बाद अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

23 सितम्बर से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगी। विद्यार्थियों को वर्ष के प्रारम्भ में योग्यतानुसार सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष अड़चनें नहीं आएंगी।

अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। अप्रैल के बाद आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित होंगे।

### यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। जल्दी-जल्दी यात्रा की संभावना बन रही है।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के

लिए प्रवास भी कर सकते हैं। मई के बाद देश विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम स्थान में राहु गुरु की युति धार्मिक कार्यों में व्यवधान डाल सकती है। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

